ISSN: 2395-7852

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management (IJARASEM)

Volume 11, Issue 4, July - August 2024

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

IMPACT FACTOR: 7.583

| www.ijarasem.com | ijarasem@gmail.com | +91-9940572462 |

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management (IJARASEM)

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 7.583 | Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 11, Issue 3, July-August 2024 |

राजस्थान के स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं की भूमिका

Manish Kumar Sharma

Assistant Professor, Department of History, Satya Sadhana Mahavidyalaya, Todabhim, Rajasthan, India

सार: 1940 के दशक में स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान, राजनीतिक सक्रियता राजस्थान के बांसवाड़ा जैसे सुदूर क्षेत्रों तक भी फैल गई। यहां महिलाओं ने सक्रिय रूप से समर्थन किया और ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन और सामंती अन्याय के खिलाफ विद्रोह में शामिल होकर प्रजामंडल की सदस्य बन गईं।

I. परिचय

राजस्थान की महिलाओं ने पारंपरिक बाधाओं के बावजूद भारत के स्वतंत्रता संग्राम में महत्वपूर्ण योगदान दिया। साहस, बलिदान और लचीलेपन की उनकी अनकही कहानियाँ इतिहास के पन्नों में गूंजती हैं, जो स्वतंत्रता की लड़ाई में राजस्थान की भूमिका की कहानी को आकार देती हैं। अपनी वीरता और शाही विरासत के लिए प्रसिद्ध राजस्थान ने कई महिलाओं की अदम्य भावना को देखा राजस्थान की महिलाओं ने पारंपरिक बाधाओं के बावजूद भारत के स्वतंत्रता संग्राम में महत्वपूर्ण योगदान दिया। साहस, बलिदान और लचीलेपन की उनकी अनकही कहानियाँ इतिहास के पन्नों में गूंजती हैं, जो स्वतंत्रता संग्राम में राजस्थान की भूमिका की कहानी को आकार देती हैं।

राजस्थान, जो अपनी वीरता और शाही विरासत के लिए प्रसिद्ध है, ने कई महिलाओं की अदम्य भावना को देखा है जिन्होंने देश की स्वतंत्रता के लिए जोश से लड़ाई लड़ी। हालाँकि उनके नाम कुछ राष्ट्रीय हस्तियों की तरह ज़ोरदार तरीके से नहीं गूंजते, लेकिन भारत के स्वतंत्रता संग्राम के ऐतिहासिक परिदृश्य को आकार देने में उनका योगदान अमूल्य है।[1,2,3]

राजमाता विजया राजे सिंधिया: एक शाही प्रतीक
राजस्थान के राजनीतिक और सामाजिक ताने-बाने में सबसे प्रमुख हस्तियों में से एक ग्वालियर के शाही परिवार से ताल्लुक रखने वाली राजमाता विजया राजे सिंधिया थीं। स्वतंत्रता आंदोलन में एक दुर्जेय शक्ति के रूप में, उन्होंने भारत की संप्रभुता की वकालत करते हुए ब्रिटिश शासन के खिलाफ विभिन्न विरोध प्रदर्शनों में सक्रिय रूप से भाग लेने के लिए परंपराओं को चुनौती दी।

गांधीवादी युग और प्रभावशाली महिलाएँ
अहिंसक प्रतिरोध के गांधीवादी दर्शन ने राजस्थान की कई महिलाओं को स्वतंत्रता आंदोलन की ओर आकर्षित किया। महात्मा गांधी की पत्नी कस्तूरबा गांधी राजस्थान की स्वतंत्रता की लड़ाई में लचीलापन और ताकत का प्रतीक थीं। अहिंसा और सामाजिक सुधारों की वकालत करने में उनकी उपस्थिति और भूमिका ने इस क्षेत्र पर एक अमिट छाप छोड़ी।

सविनय अवज्ञा में अग्रणी

राजस्थान का परिदृश्य निडर महिलाओं से सुशोभित था जिन्होंने सविनय अवज्ञा को अपनाया और विरोध प्रदर्शनों और मार्चों में सक्रिय रूप से भाग लिया। निर्मला मेहता, एक उल्लेखनीय स्वतंत्रता सेनानी और समाज सुधारक, ने महात्मा गांधी के साथ मिलकर काम किया, सत्याग्रह के सिद्धांतों का प्रचार किया और दमनकारी ब्रिटिश नीतियों के खिलाफ आंदोलनों का नेतृत्व किया।

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 7.583 | Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 11, Issue 3, July-August 2024 |

गिरिजा देवी की अग्रणी भावना

राजस्थान में स्वतंत्रता संग्राम की एक और दिग्गज गिरिजा देवी दृढ़ संकल्प और साहस की प्रतिमूर्ति थीं। विभिन्न सविनय अवज्ञा अभियानों में उनकी भागीदारी और औपनिवेशिक शासन के खिलाफ उनका दृढ़ रुख आज भी श्रद्धा का कारण बनता है।

राजस्थान में गांधीवादी विचारधारा का प्रभाव
राजस्थान में गांधीवादी विचारधारा का गहरा प्रभाव रहा, जहाँ कई महिलाओं ने खादी कातने और आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देने में अग्रणी भूमिका निभाई। सरोजिनी नायडू के गांधी स्मारक निधि ट्रस्ट द्वारा प्रचारित आंदोलनों की राजस्थान में महत्वपूर्ण उपस्थिति थी, जिसने देश के स्वतंत्रता आंदोलन में बहुत बड़ा योगदान दिया।

अनसुनी कुर्बानियाँ और योगदान
ये महिलाएँ, कई अन्य लोगों के साथ, राजस्थान की आज़ादी की खोज में शक्ति के स्तंभ के रूप में खड़ी थीं। उनके बलिदान, समर्पण और औपनिवेशिक बेड़ियों से मुक्त होने के अटूट संकल्प ने एक राष्ट्र के भाग्य को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

संघर्ष से परे विरासत
इन महिलाओं की विरासत स्वतंत्रता संग्राम से कहीं आगे तक फैली हुई है। स्वतंत्रता के बाद राष्ट्र निर्माण, सामाजिक सुधार और महिला अधिकारों की वकालत में उनकी भूमिका ने राजस्थान के सामाजिक-राजनीतिक परिदृश्य को प्रभावित करना जारी रखा।

विरासत का संरक्षण
यद्यपि मुख्यधारा के ऐतिहासिक आख्यानों में उनके योगदान को अक्सर अनदेखा कर दिया जाता है, फिर भी उनकी कहानियों, बलिदानों और अमर भावना को संरक्षित करने के प्रयास भारत की स्वतंत्रता की लड़ाई में राजस्थान की अभिन्न भूमिका की व्यापक समझ को आकार देने में महत्वपूर्ण हैं।

वीरता की प्रतिध्वनि
राजस्थान के स्वतंत्रता संग्राम का इतिहास अदम्य साहस और बलिदान की कहानियों से भरा पड़ा है, जहाँ महिलाएँ, सामाजिक बाधाओं के बावजूद, स्वतंत्रता की खोज में पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर खड़ी रहीं। उनकी दृढ़ता और दृढ़ संकल्प राजस्थान की विरासत में अंकित है, जो पीढ़ियों को स्वतंत्रता और समानता के मूल्यों को बनाए रखने के लिए प्रेरित करता है। राजस्थान की कहानी में, इन महिलाओं के प्रयास एक आवश्यक अध्याय बनाते हैं, जो एक स्वतंत्र, स्वतंत्र भारत के लिए उनकी अटूट प्रतिबद्धता का एक स्तुतिगान है।

II. विचार-विमर्श

राजस्थान राज्य में कई रियासतें हैं जिन्होंने समाज के विभिन्न वर्गों में स्वतंत्रता की लड़ाई में अपने-अपने तरीके से योगदान दिए हैं। तो चलिए आज के इस आर्टिकल में हम आपको राजस्थान की उन वीर महिलाओं से परिचित कराते हैं जिन्होंने देश की आजादी के लिए स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लिया था। बता दें कि राजस्थान अपने ऐतिहासिक पहाड़ी किलों और महलों के लिए जाना जाता है, यह महलों से संबंधित पर्यटन के लिए सबसे अच्छी जगह के रूप में दावा किया जाता है।[4,5,6] उम्मेद भवन पैलेस: यह राजस्थान का सबसे बड़ा रॉयल पैलेस है जो कि दुनिया के भी सबसे बड़े पैलेसों में से एक है।

राजस्थान की महिला स्वतंत्रता सेनानियों की सूची

- नारायणी देवी वर्मा

माणिक्य लाल वर्मा की पत्नी, नारायणी देवी वर्मा, मेवाड़ की एक स्वतंत्रता सेनानी थीं। वे एक बहादुर योद्धा थी जो सामाजिक अन्याय के खिलाफ लड़ी और दलित वर्गों के अधिकारों के लिए खड़ी हुई। 1942 में, अंग्रेजों ने भारत छोड़ो आंदोलन में उनकी भागीदारी के लिए जेल में डाल दिया था। जिसके बाद जेल से रिहा होने पर 1944 में उन्होंने भीलवाड़ा में महिला आश्रम की स्थापना की थी। नारायणी देवी वर्मा ने 1970 से 1976 के बीच राज्यसभा सदस्य के रूप में भी कार्य किया।

- जानकी देवी बजाज

एक भारतीय स्वतंत्रता कार्यकर्ता और राजस्थान की प्रमुख महिला स्वतंत्रता सेनानियों में से एक, जानकी देवी बजाज ने न केवल उत्पीड़ितों पर होने वाले अत्याचारों के खिलाफ लड़ाई लड़ी, बल्कि महिला सशक्तिकरण के लिए भी अपनी आवाज उठाई। वह सेठ जमना लाल बजाज की पत्नी थीं। साथ ही, गायों के विकास और संरक्षण के लिए काम किया और वे विनोबा भावे के करीबी सहयोगी थी जो प्रशंसित भारतीय दार्शनिक, अहिंसा और मानवाधिकारों के पैरोकार थे। 1932 में, अंग्रेजों ने जानकी देवी को सविनय अवज्ञा

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 7.583 | Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 11, Issue 3, July-August 2024 |

आंदोलन में भाग लेने के लिए जेल में डाल दिया गया था। लेकिन उसके बावजूद उन्होंने देश के लिए आजादी की लड़ाई। जिसके लिए उन्हें 1956 में पहली राजस्थानी प्राप्तकर्ता पद्म विभूषण से सम्मानित किया गया।

- दुर्गा देवी

दुर्गा देवी एक सामाजिक कार्यकर्ता, स्वतंत्रता सेनानी और शेखावाटी किसान आंदोलन की नायक थी। वे पंडित तड़केश्वर शर्मा की पत्नी थी।

- फूलन देवी

फूलन देवी (10 अगस्त 1963 - 25 जुलाई 2001), जिन्हें "बैंडिट क्वीन" के नाम से जाना जाता है, एक डाकू थीं, जो बाद में समाजवादी पार्टी की एक महिला अधिकार कार्यकर्ता और राजनेता बन गईं, जिन्होंने संसद सदस्य के रूप में कार्य किया। हालांकि, फूलन देवी एक स्वतंत्रा सेनानी नहीं थी लेकिन फिर भी उन्होंने महिलाओं के अधिकारों के लिए काफी लंबे समय तक संघर्ष किया था। जिसके लिए उनका नाम हमेशा याद किया जाता है।

 रानी लक्ष्मीबाई	▪ झाँसी रियासत की रानी, रानी लक्ष्मीबाई को वर्ष 1857 में भारत की स्वतंत्रता के पहले युद्ध में उनकी भूमिका के लिये जाना जाता है। ▪ वर्ष 1835 में जन्मी मणिकर्णिका तांबे ने झाँसी के राजा से शादी की। ▪ दंपति ने राजा की मृत्यु से पहले दामोदर राव को अपने बेटे के रूप में अपनाया, जिसे ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी ने हड़प नीति के अनुसार कानूनी वारिस के रूप में स्वीकार करने से इनकार कर दिया और झाँसी पर कब्ज़ा करने का फैसला किया। ○ वर्ष 1848 से 1856 तक भारत के गवर्नर-जनरल के रूप में लॉर्ड डलहौजी द्वारा व्यापक रूप से पालन की जाने वाली हड़प नीति एक विलय नीति थी।[7,8,9] ▪ अपने क्षेत्र को सौंपने से इनकार करते हुए रानी ने उत्तराधिकारी की ओर से शासन करने का फैसला किया और बाद में वर्ष 1857 में अंग्रेजों के खिलाफ विद्रोह में शामिल हो गई। ▪ जनरल ह्यूज रोज़ के नेतृत्व में, ईस्ट इंडिया कंपनी की सेना ने जनवरी 1858 तक बुंदेलखंड में अपना जवाबी हमला शुरू कर दिया था। ▪ दामोदर राव को अपनी पीठ के पीछे बाँधकर घोड़े पर सवार होकर, उसने अकेले ही अंग्रेजों से लड़ाई लड़ी। ▪ उसने तात्या टोपे और नाना साहब की मदद से ग्वालियर के किले पर विजय प्राप्त की। ▪ अंग्रेजों के घेरे में आकर वह झाँसी के किले से भाग निकली। वह ग्वालियर के फूल बाग के पास लड़ाई में घायल हो गई थी, जहाँ बाद में उसकी मौत हो गई।
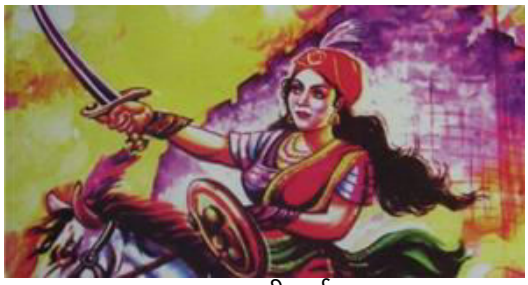 झलकारी बाई	▪ रानी लक्ष्मीबाई की महिला सेना में एक सैनिक, दुर्गा दल, रानी के सबसे भरोसेमंद सलाहकारों में से एक बन गया। ▪ वह रानी को खतरे से बचाने के लिये अपनी जान जोखिम में डालने हेतु जानी जाती है। ▪ आज तक बुंदेलखंड के लोग उनकी वीरता की गाथा को याद करते हैं, और उन्हें अक्सर बुंदेली पहचान के प्रतिनिधि के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। ▪ इस क्षेत्र के कई दलित समुदाय उन्हें भगवान के

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 7.583 | Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 11, Issue 3, July-August 2024 |

	अवतार के रूप में देखते हैं और उनके सम्मान में हर साल झलकारीबाई जयंती भी मनाते हैं।
 दुर्गा भाभी	▪ दुर्गावती देवी, जिन्हें दुर्गा भाभी के नाम से जाना जाता था, एक क्रांतिकारी थीं, जो औपनिवेशिक शासन के खिलाफ सशस्त्र संघर्ष में शामिल हुईं। ▪ ये नौजवान भारत सभा की सदस्या भी थीं तथा इन्होंने वर्ष 1928 में ब्रिटिश पुलिस अधिकारी जॉन पी. सॉन्डर्स की हत्या के बाद भगत सिंह को लाहौर से भेष बदलकर भागने में मदद की। ▪ इसी क्रम में रेलयात्रा के दौरान, दुर्गावती और भगत सिंह ने अंग्रेजों के सामने अपने आप को युगल एवं के राजगुरु को उनके नौकर के रूप में प्रस्तुत किया। ○ बाद में, भगत सिंह, राजगुरु और सुखदेव की फाँसी का बदला लेने के लिये, इन्होंने पंजाब के पूर्व राज्यपाल लॉर्ड हैली की हत्या करने का प्रयास किया जिसमें ये असफल रहीं। ▪ वर्ष 1907 में इलाहाबाद में इनका जन्म हुआ और इन्होंने हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन (HSRA) के सदस्य भगवती चरण वोहरा से शादी की और अन्य क्रांतिकारियों के साथ दिल्ली में एक बम फैक्ट्री का भी संचालन किया था।
 रानी गैदिनल्यू	▪ वर्ष 1915 में वर्तमान मणिपुर में जन्मी रानी गैदिनल्यू एक आध्यात्मिक नगा और राजनीतिक नेता थीं, जिन्होंने अंग्रेजों से लड़ाई लड़ी थी। ▪ वह हेरका धार्मिक आंदोलन में शामिल हो गईं जो बाद में अंग्रेजों को देश से बाहर निकालने वाला एक आंदोलन बन गया। ▪ इन्होंने ब्रिटिश साम्राज्य के खिलाफ विद्रोह कर दिया और करों का भुगतान करने से इंकार कर दिया तथा लोगों से भी ऐसा करने के लिये कहा। ▪ इन्हें पकड़ने के लिये अंग्रेजों ने एक तलाशी अभियान शुरू किया, लेकिन फिर भी वह गिरफ्तारी से बच गईं । ▪ गैदिनल्यू को अंततः वर्ष 1932 में गिरफ्तार कर लिया गया था तब वह केवल 16 वर्ष की थी और बाद में उन्हें आजीवन कारावास की सज़ा दी गई । ▪ वह वर्ष 1947 में जेल से रिहा हुई थीं तथा तत्कालीन प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू ने गैदिनल्यू को "पहाड़ियों की बेटी" के रूप में वर्णित किया, और उनके साहस के लिये उन्हें 'रानी' की उपाधि दी।

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 7.583 | Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 11, Issue 3, July-August 2024 |

 बेगम हज़रत महल	▪ इनके पति एवं अवध के नवाब वाज़िद अली शाह को वर्ष 1857 के विद्रोह के बाद निर्वासित कर दिया गया था, बेगम हज़रत महल ने अपने समर्थकों के साथ अंग्रेजों को भगाकर अवध पर नियंत्रण स्थापित कर लिया था परंतु औपनिवेशिक शासकों द्वारा इस क्षेत्र पर पुनः नियंत्रण करने के बाद इन्हें पीछे हटने के लिये मज़बूर होना पड़ा।
 रानी वेलु नचियार	▪ वर्ष 1857 के विद्रोह से कई वर्ष पूर्व, वेलु नचियार ने अंग्रेजों के खिलाफ युद्ध छेड़ा और इसमें विजयी हुईं। ▪ वर्ष 1780 में रामनाथपुरम में जन्मी, उनका विवाह शिवगंगई के राजा से हुआ था। ▪ ईस्ट इंडिया कंपनी के साथ युद्ध में अपने पति के मारे जाने के बाद उन्होंने संघर्ष में प्रवेश किया तथा पड़ोसी राजाओं के समर्थन से विजय प्राप्त कीं। ▪ उन्होंने पहले मानव बम का निर्माण किया साथ ही वर्ष 1700 के दशक के अंत में प्रशिक्षित महिला सैनिकों की पहली सेना की स्थापना की। ▪ माना जाता है कि उनके सेना कमांडर कुयली ने खुद को आग लगा ली तथा ब्रिटिश गोला बारूद के ढेर में चली गई थी।

III. परिणाम

लगभग 13 वर्ष की आयु में सरोजिनी ने 1300 पदों की 'झील की रानी' नामक लंबी कविता और लगभग 2000 पंक्तियों का एक विस्तृत नाटक लिखकर अंग्रेज़ी भाषा पर अपना अधिकार सिद्ध कर दिया।

कवयित्री और भारत देश के सर्वोत्तम राष्ट्रीय नेताओं में से एक थीं। वह भारत के स्वाधीनता संग्राम में सदैव आगे रहीं। उनके संगी साथी उनसे शक्ति, साहस और ऊर्जा पाते थे। युवा शक्ति को उनसे आगे बढ़ने की प्रेरणा मिलती थी। बचपन से ही कुशाग्र-बुद्धि होने के कारण उन्होंने 13 वर्ष की आयु में लेडी ऑफ़ दी लेक नामक कविता रची। वे 1895 में उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए इंग्लैंड गईं और पढ़ाई के साथ-साथ कविताएँ भी लिखती रहीं। गोल्डन थ्रैशोल्ड उनका पहला कविता संग्रह था। उनके दूसरे तथा तीसरे कविता संग्रह बर्ड ऑफ टाइम तथा ब्रोकन विंग ने उन्हें एक सुप्रसिद्ध कवयित्री[10,11,12] बना दिया।

'श्रम करते हैं हम
कि समुद्र हो तुम्हारी जागृति का क्षण
हो चुका जागरण
अब देखो, निकला दिन कितना उज्ज्वल।'
ये पंक्तियाँ सरोजिनी नायडू की एक कविता से हैं, जो उन्होंने अपनी मातृभूमि को सम्बोधित करते हुए लिखी थी।
श्रीमति अंजना देवी चौधरी स्वतंत्रता सेनानी रामनारायण चौधरी की धर्मपत्नि थी। वह प्रथम कांग्रेसी महिला थी, जिसने सामंती अत्याचारों के विरुद्ध विद्रोह किया। अत: वह गिरफ़्तार और निर्वासित हुई।

श्रीमति चौधरी ने बेगूं (मेवाड़) में सत्याग्रही किसान महिलाओं को मार्गदर्शन दिया। 1932 से 1935 तक राष्ट्रीय आन्दोलनों में भाग लेने के कारण दो बार जेल गईं। उन्होंने 1937 ई. में डुंगरपुर राज्य में भीलों की सेवा का कार्य किया। वे पाँच वर्ष तक भारत सेवक समाज के महिला सूचना विभाग के संचालन में व्यस्त रहीं। उन्होंने स्वतंत्रता संघर्ष में अपने पति के कंधे से कंधा मिलाकर साथ दिया। वे जीवन पर्यंत जन सेवा एवं राष्ट्र के निर्माण के लिए समर्पित भाव से कार्य करती रहीं।

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 7.583 | Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 11, Issue 3, July-August 2024 |

केंद्रीय संस्कृति राज्य मंत्री श्रीमती मीनाक्षी लेखी ने आज नई दिल्ली में आजादी का महोत्सव के हिस्से के रूप में स्वतंत्रता संग्राम की भारत की गुमनाम नायिकाओं पर एक सचित्र पुस्तक का विमोचन किया। पुस्तक को अमर चित्र कथा के साथ मिलकर जारी किया गया है, जो कि भारत का एक लोकप्रिय प्रकाशन है।

इस अवसर पर श्रीमती मीनाक्षी लेखी ने कहा कि यह पुस्तक उन कुछ महिलाओं के साहसपूर्ण जीवन का वर्णन करती है, जिन्होंने इस अभियान का नेतृत्व किया तथा पूरे देश में विरोध एवं विद्रोह की मशाल जलाई। उन्होंने कहा कि इसमें उन रानियों की कहानियां हैं, जिन्होंने साम्राज्यवादी शासन के खिलाफ संघर्ष में साम्राज्यवादी शक्तियों से संघर्ष किया और जिन महिलाओं ने मातृभूमि के लिए अपना जीवन समर्पित किया और यहां तक कि बलिदान भी दिया।

उन्होंने कहा कि अगर हम भारतीय इतिहास के गौरवशाली अतीत को देखें, तो हम पाते हैं कि भारतीय संस्कृति ऐसी थी जिसने महिलाओं का सम्मान किया और लैंगिक रूप से भेदभाव के लिए कोई जगह नहीं थी। यह इस तथ्य से स्पष्ट है कि महिलाओं में युद्ध के मैदान में सैनिकों की तरह लड़ने का साहस और शारीरिक शक्ति थी। पुस्तक में शामिल कुछ गुमनाम नायिकाओं की वीरता की गाथा सुनाते हुए श्रीमती मीनाक्षी लेखी ने कहा कि महिलाएं साम्राज्यवादी शक्तियों के खिलाफ असंतोष व्यक्त करने में समान रूप से मुखर थीं। उदाहरण के लिए रानी अब्बक्का ने कई दशकों तक पुर्तगालियों के हमलों का मुंहतोड़ जवाब दिया। उन्होंने कहा कि इतिहास शायद ही इस परिदृश्य में लिखा गया है और अब आजादी का अमृत महोत्सव के हिस्से के रूप में, जैसा कि प्रधानमंत्री का दृष्टिकोण है, इन गुमनाम नायकों के बलिदानों को भी लोगों के सामने लाया जाएगा।

श्रीमती मीनाक्षी लेखी ने कहा कि स्वतंत्रता का उत्सव तभी सार्थक है जब हम अपने युवाओं को अतीत से परिचित कराएं और उन्हें अपने इतिहास पर गर्व महसूस कराएं। श्रीमती मीनाक्षी लेखी ने बताया कि युवाओं के लिए यह महत्वपूर्ण है कि वे स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास को साम्राज्यवादी के बजाय भारतीय परिप्रेक्ष्य से समझें, जिसे इस पुस्तक के माध्यम से बताने का प्रयास किया गया है। उन्होंने अमर चित्र कथा की टीम को धन्यवाद देते हुए कहा कि अमर चित्र कथा ने वर्षों से बच्चों में चरित्र निर्माण और उन्हें संस्कार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

संस्कृति मंत्रालय ने अमर चित्र कथा के साथ मिलकर स्वतंत्रता संग्राम के 75 गुमनाम नायकों पर सचित्र पुस्तकों का विमोचन करने का निर्णय लिया है। दूसरा संस्करण 25 गुमनाम जनजातीय स्वतंत्रता सेनानियों पर होगा जो प्रक्रियाधीन है और इसमें कुछ समय लगेगा। तीसरा और अंतिम संस्करण अन्य क्षेत्रों के 30 गुमनाम नायकों पर होगा।

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन ने साम्राज्यवादी शासन के विरोध में जीवन के हर क्षेत्र से लाखों लोगों को एकजुट किया। हम सभी स्वतंत्रता संग्राम के कुछ ही महान, प्रतिष्ठित नेताओं को जानते हैं। इसे देखते हुए, भारत की स्वतंत्रता के 75 वर्ष के उपलक्ष्य में आजादी का अमृत महोत्सव (एकेएएम) के एक हिस्से के रूप में, भारत सरकार ने हमारे स्वतंत्रता संग्राम के भूले-बिसरे नायकों को याद करने और उनका स्मरण करने का फैसला किया है, जिनमें से कइयों के प्रसिद्ध होने के बावजूद नई पीढ़ी उन्हें नहीं जानती हैं।[13,14]

कर्नाटक के उल्लाल की रानी, रानी अब्बक्का ने 16वीं शताब्दी में शक्तिशाली पुर्तगालियों से लड़ाई लड़ी और उन्हें पराजित किया। शिवगंगा की रानी वेलु नचियार ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के खिलाफ युद्ध छेड़ने वाली पहली भारतीय रानी थीं। झलकारी बाई एक महिला सैनिक थीं, जो झांसी की रानी की प्रमुख सलाहकारों में से एक बन गईं और भारतीय स्वतंत्रता की पहली लड़ाई, 1857 में एक प्रमुख हस्ती बन गईं।

मातंगिनी हाजरा बंगाल की एक बहादुर स्वतंत्रता सेनानी थीं, जिन्होंने अंग्रेजों के खिलाफ आंदोलन करते हुए अपने प्राण न्यौछावर कर दिए। गुलाब कौर एक स्वतंत्रता सेनानी थीं, जिन्होंने भारतीय लोगों को ब्रिटिश राज के खिलाफ लड़ने और संगठित करने के लिए अपने जीवन की आशाओं और आकांक्षाओं का त्याग किया। चकली इलम्मा एक क्रांतिकारी महिला थीं, जिन्होंने 1940 के दशक के मध्य में तेलंगाना विद्रोह के दौरान जमींदारों के अन्याय के खिलाफ लड़ाई लड़ी थी। सरोजिनी नायडू की बेटी पद्मजा नायडू और अपने आप में एक स्वतंत्रता सेनानी, जो स्वतंत्रता के बाद पश्चिम बंगाल की राज्यपाल और बाद में एक मानवतावादी बनीं।

पुस्तक में बिश्नी देवी शाह की कहानी है, जो एक ऐसी महिला थीं, जिन्होंने उत्तराखंड में बड़ी संख्या में लोगों को स्वतंत्रता आंदोलन में शामिल होने के लिए प्रेरित किया। सुभद्रा कुमारी चौहान सबसे महान हिंदी कवियों में से एक थीं, जो स्वतंत्रता आंदोलन में भी एक प्रमुख हस्ती थीं। दुर्गावती देवी वह बहादुर महिला थीं, जिन्होंने जॉन सॉन्डर्स की हत्या के बाद भगत सिंह को सुरक्षित निकलने में मदद की और उनके क्रांतिकारी दिनों के दौरान भी अनेक रूप में सहायता की। एक प्रमुख स्वतंत्रता सेनानी, सुचेता कृपलानी ने स्वतंत्र भारत की पहली महिला मुख्यमंत्री के रूप में उत्तर प्रदेश सरकार का नेतृत्व किया।

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 7.583 | Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 11, Issue 3, July-August 2024 |

पुस्तक में केरल के त्रावणकोर में स्वतंत्रता आंदोलन के एक प्रेरणादायक नेता अक्कम्मा चेरियन की कहानी है, उन्हें महात्मा गांधी द्वारा 'त्रावणकोर की झांसी की रानी' नाम दिया गया था। अरुणा आसफ अली एक प्रेरणादायक स्वतंत्रता सेनानी थीं, जिन्हें शायद 1942 में भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान मुंबई में भारतीय राष्ट्रीय ध्वज फहराने के लिए सबसे ज्यादा याद किया जाता है। आंध्र प्रदेश में महिलाओं की मुक्ति के लिए एक अथक संघर्ष करने वाली कार्यकर्ता दुर्गाबाई देशमुख एक प्रख्यात स्वतंत्रता सेनानी और संविधान सभा की सदस्य भी थीं। नागा आध्यात्मिक और राजनीतिक नेता रानी गाइदिन्ल्यू ने मणिपुर, नागालैंड और असम में अंग्रेजों के खिलाफ सशस्त्र विद्रोह का नेतृत्व किया। उषा मेहता बहुत कम उम्र से एक स्वतंत्रता सेनानी थीं, जिन्हें 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान एक भूमिगत रेडियो स्टेशन के संचालन के लिए याद किया जाता है।[15,16,17]

IV. निष्कर्ष

ओडिशा की सबसे प्रमुख महिला स्वतंत्रता सेनानियों में से एक, पार्वती गिरी को लोगों के उत्थान में उनके काम को लेकर पश्चिमी ओडिशा की मदर टेरेसा कहा जाता था। भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान एक प्रमुख स्वतंत्रता सेनानी तारकेश्वरी सिन्हा स्वतंत्र भारत के शुरुआती दशकों में एक प्रख्यात राजनेता बन गईं। एक स्वतंत्रता सेनानी स्नेहलता वर्मा ने मेवाड़, राजस्थान में महिलाओं की शिक्षा और उत्थान के लिए निरंतर कार्य किए। भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान, तिलेश्वरी बरुआ भारत की सबसे कम उम्र की शहीदों में शामिल थीं। उन्हें 12 साल की उम्र में गोली मार दी गई थी, जब उन्होंने और कुछ स्वतंत्रता सेनानियों ने एक पुलिस स्टेशन पर तिरंगा फहराने की कोशिश की थी।[18,19]

संदर्भ

1. Zakaria, Anam. "Remembering the war of 1971 in East Pakistan". Al Jazeera (अंग्रेज़ी में). अभिगमन तिथि 2023-01-18.
2. ↑ "Vasco da Gama reaches India". HISTORY (अंग्रेज़ी में). अभिगमन तिथि 2023-01-18.
3. ↑ "Sikh Wars | Anglo-Sikh, Punjab, Maharaja Ranjit | Britannica". www.britannica.com (अंग्रेज़ी में). अभिगमन तिथि 2023-01-18.
4. ↑ "P Chidambaram releases documentary film on Alagumuthu Kone". The Times of India. 2012-12-24. आइ॰एस॰एस॰एन॰ 0971-8257. अभिगमन तिथि 2023-01-19.
5. ↑ Gupta, Sanjukta Das; Basu, Raj Sekhar (2012). Narratives from the Margins: Aspects of Adivasi History in India (अंग्रेज़ी में). Primus Books. आई॰ऍस॰बी॰ऍन॰ 978-93-80607-10-8.
6. ↑ "Tribal Rebellions during British India: A Complete Summary". Jagranjosh.com (अंग्रेज़ी में). 2018-03-20. अभिगमन तिथि 2023-01-19.
7. ↑ Gupta, Sanjukta Das (2011). Adivasis and the Raj: Socio-economic Transition of the Hos, 1820-1932 (अंग्रेज़ी में). Orient Blackswan. आई॰ऍस॰बी॰ऍन॰ 978-81-250-4198-6.
8. ↑ Jha, Jagdish Chandra (1967-01-01). The Bhumij Revolt (1832-33): (ganga Narain's Hangama Or Turmoil) (अंग्रेज़ी में). Munshiram Manoharlal Publishers Pvt. Limited. आई॰ऍस॰बी॰ऍन॰ 978-81-215-0353-2.
9. ↑ Jha, Jagdish Chandra (1958). "The Kol Rising of Chotanagpur (1831-33)—Its Causes". Proceedings of the Indian History Congress. 21: 440–446. आइ॰एस॰एस॰एन॰ 2249-1937.
10. ↑ "Remembering Santal Hul: The First Struggle Against Imperialism". thewire.in (अंग्रेज़ी में). अभिगमन तिथि 2023-01-19.
11. ↑ Singh, Kumar Suresh (2002). Birsa Munda and His Movement, 1872-1901: A Study of a Millenarian Movement in Chotanagpur (अंग्रेज़ी में). Seagull Books. आई॰ऍस॰बी॰ऍन॰ 978-81-7046-205-7.
12. ↑ A.K.Dhan (2017-08-29). BIRSA MUNDA (अंग्रेज़ी में). Publications Division Ministry of Information & Broadcasting. आई॰ऍस॰बी॰ऍन॰ 978-81-230-2544-5.
13. ↑ Staff, T. N. M. (2017-01-03). "Remembering Queen Velu Nachiyar of Sivagangai, the first queen to fight the British". The News Minute (अंग्रेज़ी में). अभिगमन तिथि 2023-01-19.
14. ↑ "Velu Nachiyar, Jhansi Rani of Tamil Nadu". The Times of India. 2016-03-17. आइ॰एस॰एस॰एन॰ 0971-8257. अभिगमन तिथि 2023-01-19.
15. ↑ Rajesh, K. Guru. Sarfarosh: A Naadi Exposition of the Lives of Indian Revolutionaries (अंग्रेज़ी में). Notion Press. आई॰ऍस॰बी॰ऍन॰ 978-93-5206-173-0.
16. ↑ "PAIK REBELLION | Welcome to Khordha District Web Portal | India" (अंग्रेज़ी में). अभिगमन तिथि 2023-01-19.
17. ↑ O'Kell, Robert P. (2014-01-23). Disraeli: The Romance of Politics (अंग्रेज़ी में). University of Toronto Press. आई॰ऍस॰बी॰ऍन॰ 978-1-4426-6104-2.
18. ↑ Patel 2008, पृष्ठ 56
19. ↑ Nelson, Dean (7 July 2010). "Ministers to build a new 'special relationship' with India". The Daily Telegraph. मूल से 7 फ़रवरी 2011 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 20 नवंबर 2016.

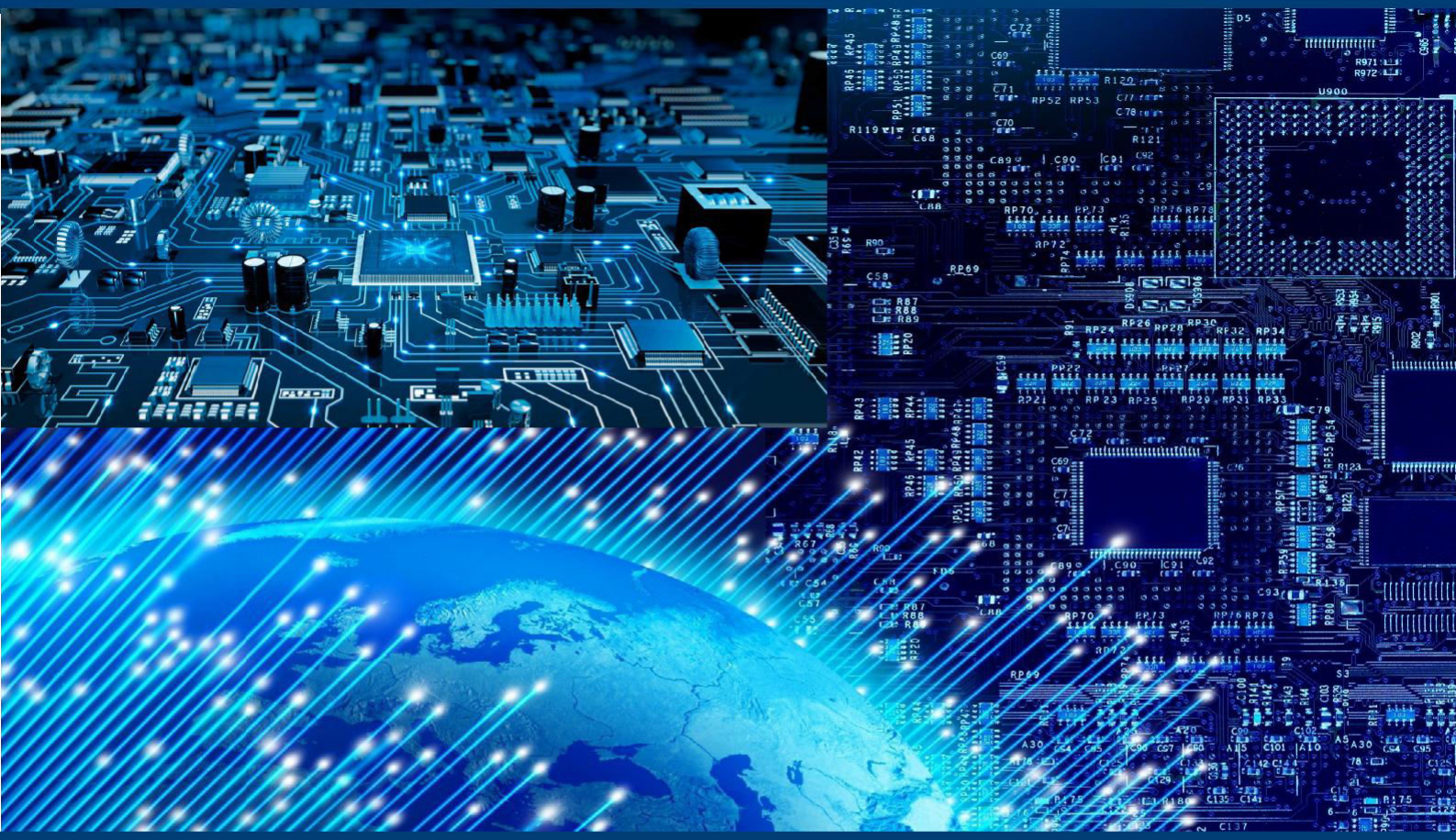

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management (IJARASEM)

| Mobile No: +91-9940572462 | Whatsapp: +91-9940572462 | ijarasem@gmail.com |